वर्ष-१३ अंक-९
२७ मई २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ अंक-९

२७ मई २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११६
विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	जातीय भेदभाव विनाश व	४
२.	पेट के रोगों में गुणकारी नींबू	८
३.	क्या आप जानते हैं	९
४.	मानवता की पुकार	१०
५.	लालच की सजा	१२
६.	गाय सर्वोत्तम क्यों	१३
७.	ईश्वर	१४
८.	पं. मोतीलाल नेहरू, गायत्री मन्त्र	१६
९.	अथर्ववेद की सूक्तियाँ	१८
१०.	गो मूत्र के सरलतम घरेलू औषधीय	१९
११.	कर्म-फल सिद्धान्त	२०
१२.	अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यामा	२२
१३.	सार्वदेशिक सभा के द्वारा संगठन का	२४

जून माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

- गायत्री जयंती, गंगा दशहरा ४
- विश्व पर्यावरणदिवस ५
- संत कबीरदास जयंती बिरसा मुण्डा शहीदी दिवस ९
- गुरूहरगोविंद जयंती १०
- उथम सिंहशहीद दिवस १३
- सिंधु सम्राट महाराज दाहरसिंह शहीद दिवस १६
- महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस, फादर्स डे १८
- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस २१
- संत नामदेव पुण्यतिथि २२
- वीरांगना दुर्गावती बलिदान दिवस २४

सम्पादकीय :

जातीय भेदभाव विनाश व विकृति का कारण

जन्मगत व्यवस्था के अनुसार जाति में मनुष्य समाज को बांटना समस्त समाज के लिए एक नासूर है। ऐसा नासूर जिससे समाज, संगठन संस्कृति सभी बुरी तरह प्रभावित हो रही है। समाज में अनेक मान्यताएं प्रचलन में ऐसी भी आ गई हैं जिनका कोई महत्व नहीं है वे कब से, क्यों रही हैं, किसने चलाई हैं इसका कोई ठोस आधार नहीं है।

जातिवाद के कारण यह देश वर्षों तक गुलाम रहा सनातन धर्म की जातियों में बटी शक्ति ने विदेशी ताकतों को अवसर प्रदान किया। जातिवाद के कारण हमने ही भाईयों को तिरस्कृत कर उन्हें सनातन धर्म से पृथक होने हेतु विवश किया। जातिवाद के विष का ही प्रभाव था, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महान व्यक्तित्व को बौद्ध सम्प्रदाय स्वीकार करना पड़ा, एक बार पढ़े वीर सावरकर की कलम से लिखी तथा हृदय विदारक घटनाओं से पूर्ण मोपला काण्ड जिसने सनातन संस्कृति को भारी क्षति पहुंचाकर दूसरे सम्प्रदाय को अपना लिया। जातिवाद के परिणाम स्वरूप ही अनेक राजाओं को अपने सिंहासन से हाथ धोना पड़ा। जातिवाद का ही दुष्परिणाम काश्मीर, केरल, पूर्वांचल के कई राज्य हैं जहॉ सनातन धर्मी अल्प संख्यक हो गए और अपने ही देश में अनेक प्रकार के संकट हिन्सा और अपमान से भरी जिन्दगी जी रहे हैं। इस छुआछूत की मानसिकता ने ही अपनी शक्ति, संगठन को कमजोर कर दिया। जन्म से मनुष्य की जाति मानने का कोई शास्त्रोक्त प्रमाण नहीं है।

योगीराज श्रीकृष्ण ने चार वर्णों को गुण कर्म के अनुसार माना, कहा –

चातुर्वरण्यं मयाश्रृष्टं गुण कर्म विभाग सः

संसार के श्रेष्ठतम विद्वान आचार्य मनु ने जन्म से जाति को नहीं कर्म से माना है। वैसे जाति शब्द भी उपयुक्त नहीं वर्ण व्यवस्था को माना है। कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था का सिद्धान्त माना गया है। जन्म से सभी शूद्र (अज्ञानी) ही होते हैं। परमात्मा ने हमे यह स्वतन्त्रता दी है कि हम अपने जीवन को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र जो बनाना चाहे बना सकते हैं। जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पैदा नहीं होता। आचार्य मनु लिखते हैं, जन्म से सभी शूद्र हैं संस्कारों से ब्राह्मण बनते हैं।

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्चयते।

प्राचीन समय में वर्ण व्यवस्था ही व्यवहार में भी इसकी पुष्टि सन्त तुलसीदास जी की इन पंक्तियों से भी होती है।

वरणाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखई नहिं भय सोक न रोग।।

किसी निम्न परिवार में जन्म लेने वाला बालक अपनी कार्यशैली और विद्वता के कारण ब्राह्मण बन सकता है और उच्च कुल में जन्म लेने वाला चाहे वह ब्राह्मण परिवार में जन्मा हो अपने निम्न कर्मों के कारण वह शुद्ध बन जाता है।

हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में जो सात्विक आध्यात्मिक विचारधारा का हो अध्यापन स्वाध्याय से जिसने विद्वता प्राप्त की हो। जो समाज को सद्ज्ञान प्रदान करने की योग्यता और भावना रखता हो उसे ब्राह्मण वर्ण में स्थान मिलता था।

जो पराक्रमी बहादुर, बीर और रक्षक के भावों से युद्ध व शस्त्र कला में कुशल होता था उसे क्षत्रिय माना जाता था। अर्थ व वस्तुओं के जो हिसाब किताब, आदान प्रदान में कुशल हो जिसमें व्यापार के गुण पाये जावे, ऐसे को वैश्य के रूप में माना जाता था। आचार्य मनु कहते हैं –

शूद्रा ब्राह्मण तामेति, ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।
क्षत्रिया जातमेलन्तु विद्या वैश्यस्यतमैव।।

शूद्र ब्राह्मण बन सकता है, ब्राह्मण शूद्र हो सकता है। इसी तरह क्षत्रिय और वैश्य के संबंध में जानना चाहिए।

इसके अतिरिक्त जिसकी न तो बुद्धि तीव्र हो जिसमें ब्रह्मणत्व के गुण न हो, क्षत्रिय के समान बहादुर, युद्ध व शस्त्र कला में निपुण न हो रक्षा का अभाव हो। जिसमें व्यापार करने की समझ भी न हो तो ऐसे व्यक्ति को सेवा का कार्य सौंपकर उसे शूद्र कहा जाता था। शूद्र का अर्थ कदापि अछूत नहीं है, शूद्र का अर्थ समाज का निम्न तपका भी नहीं है। **शूद्र का अर्थ सेवा करने वाले से है।**

सेवा करने वाले को समाज मे हेय दृष्टि से देखा जावे, उसे नींच समझा जावे इससे बड़ा अन्याय और पाप कुछ नहीं हो सकता। समाज का सोच और उनका नजरिया एकदम विपरीत है दिवालियापन का द्यौतक है।

संसार के तीनों वर्णों का सही अर्थों में कोई सहयोगी है तो वह शूद्र ही है। शारीरिक मेहनत द्वारा समाज की सेवा शूद्र ही करता है यदि शूद्र (सेवक) वर्ग अपना कार्य करना बन्द कर दे तो तीनों वर्ण का काम रूक जायेगा। प्रत्येक वर्ण को अपना कार्य करने में जीवन यापन में शूद्र की सेवा का ही उपयोग करना होगा, इसका कोई विकल्प भी नहीं है। इसलिए शूद्र (सेवक) वर्ण के प्रति जातिगत, उपेक्षापूर्ण भाव रखना निन्दनीय सोच है।

विद्वानों ने चारों वर्णों की उपमा इस शरीर से की है मस्तक को ब्राह्मण, हाथों को क्षत्रिय, उदर को वैश्य और पैरों को शूद्र की उपमा दी है। विचार करके देखें कि शरीर में ये शूद्र (पैर) न हो तो क्या होगा ? तीनों वर्ण ब्राह्मण (सिर), क्षत्रिय (हाथ), वैश्य (पेट) एक ही स्थान पर पड़े रहेगें सारी गतिविधियॉ एक ही जगह तक सीमिट कर रह जावेगी।

इसलिए ये शूद्र हमारी समाज के प्रमुख अंग हैं, हमारे सहयोगी हैं, सेवक है, इनसे मित्रवत, अपनत्व का भाव रखना चाहिए।

राजस्थान में यह परम्परा थी कि विवाह के पश्चात ससुराल आने पर पुत्र वधु मेहतरानी (शूद्र) के चरण स्पर्श करती थी। हमारे सनातन के अनेक अनुयायी जो महापुरूष, ऋषि, विद्वान हुए वे इसी तथाकथित शूद्र परिवार में ही पैदा हुए किन्तु उनके आचरण, त्याग, विद्वता के कारण समाज ने उन्हें उच्च स्थान दिया। ऋषि बाल्मिक, भक्त रैदास, रहीम आदि ऐसे अनेक नाम हैं।

ये जाति का निर्माण परमात्मा ने नहीं किया, किसी को उँच नींच की श्रेणी में नही बांटा यह विकृति मानवीय मस्तिष्क की उपज है। परमात्मा की व्यवस्था को बिगाड़ने का प्रयास है। महाभारत काल के पश्चात यह कुप्रथा प्रारंभ हुई है।

जाति शब्द का उपयोग प्राणियों एक प्रकार की श्रेणी (जाति) के लिए किया जाना तो ठीक है पहले यही किया जाता था। जैसे पंखों से उड़ने वाले पक्षियों की जाति पक्षी जाति जल में रहने वाली जीवों की जलचर जाति, चौपाए प्राणियों की पशुजाति और मनुष्य के रूप में जन्में सभी की मानव जाति है। इस प्रकार समस्त मानवों की जाति है। इस प्रकार समस्त मानवों की जाति एक ही कहलायेगी **''मानव जाति''**।

''दुनिया का इकरंगी आलम आम था।
पहले एक कौम थी, इंसान जिसका नाम था।।''

आश्चर्य होता है नींच से नींच कर्म करने वाला जिसका बहिष्कार होना चाहिए वह मात्र एक उच्च जाति सूचक परिवार में जन्म लेने मात्र से सम्मान पाता है, दूसरी ओर अपनी पूर्ण निष्ठा से समाज की सेवा करने वाला एक ईमानदार सेवक (शूद्र) उपेक्षित होता है।

दुःख होता है जब उस परमात्मा की ही एक सन्तान को कुंए से पानी नहीं भरने दिया जाता है, उनके वैवाहिक या अन्य पारिवारिक कार्यक्रमों में अनेक प्रकार की शर्ते लगाकर कई कार्यों को करने से रोका जाता है। उनके हाथ का पानी पीना अधर्म माना जाता हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि जो गाय का रक्षक है, सनातन धर्मी है, उससे नफरत करते हैं वहीं ओर सनातन संस्कृति के विरोधी गौमांस भक्षकों, से संबंध बनाने में कोई परेशानी नहीं, उनसे कोई छुआछूत या भेदभाव नहीं, यह कैसा अन्याय है ?

ऐसा करना पाप है सामाजिक द्रोह है, ईश्वर के उन पुत्र पुत्रियों के प्रति अत्याचार है, ऐसे कर्मों से हमें ईश्वर भी क्षमा नहीं करेगा।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज को इस सामाजिक बुराई को नष्ट करने का मार्गदर्शन दिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने अछूतोद्धार का प्रस्ताव देश की कांग्रेस के

समक्ष रखा। हजारों सनातनधर्मियों को विधर्मी होने से बचाया जो किसी कारण सनातन धर्म से पृथक होकर किसी मत मतान्तर में चले गए थे उन्हें पुनः सनातन धर्म में आने का मार्ग खोल दिया। इस प्रयास से हजारों पुनः सनातन धर्मी बन गए।

आर्य समाज इस जाति जो जन्म के अनुसार मानी जाती है, उसका समर्थक नहीं है। आर्य समाज ने ही यह आन्दोलन चलाया है जिसका परिणाम है अन्य समाज की दृष्टि से अछूत हरिजन कहलाने वाले परिवार के अनेक विद्वान, पुरोहित, प्रचारक, सन्यासी सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर पूजा रहे हैं।

आज आवश्यकता है समाज को समान दृष्टिकोण की, संगठन की तभी यह संस्कृति सुरक्षित रह सकेगी। आर्य समाज को ये पीड़ा है, परन्तु उसे ही अपना हितैषी नहीं मानते। एक शायर ने लिखा –

जिन्हें फिक्र है जख्म की, उन्हें कातिल समझते हैं।
फिर तो ये घाव, ईलाही ठीक नहीं हो सकता।।

धर्म

अर्थाः पादरजोपमा गिरिनदीवेगोपमं यौवनम्।
आयु यं जल–लोल–बिन्दु–चपलं फेनोपमं जीवनम्।।
धर्म यो न करोति निन्दितमतिः स्वर्गार्गलोद्घाटनम्।
पश्चाततापयुतो जरापरिगतः शोकग्निना दह्यते।।

भावार्थ – धन तो पैरो की धूलि के समान हैं, यौवन पहाड़ी नदी के वेग के समान हैं, आयु पानी के प्रवाह के समान हैं और जीवन फेन (झाग) के समान हैं, ऐसा जानते हुए भी जो मूर्ख धर्माचरण नहीं करता, वह पीछे बुढ़ापे में शोक रूपी अग्नि में पश्चाताप करता हुआ जलता है।

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

– आर्य समाज

पेट के रोगों में गुणकारी : नींबू

अम्लता (एसिडिटी) : खाना खाने के बाद एक कप पानी मे आधा नींबू, जरा सा खाने का सोडा मिलाकर प्रतिदिन दो बार पियें।

दोपहर के भोजन से आधा घण्टा पहले नींबू की मीठी शिकंजी दो महीने तक पियें। खाने के बाद न पियें।

खट्टी डकारें : यदि खट्टी डकारें आती हों, तो गरम पानी में नींबू निचोड़कर पियें।

पेटदर्द : पचास ग्राम पोदीना की चटनी पतले कपड़े में निचोड़कर रस निकाल कर उसमें आधा नींबू निचोड़े, दो चम्मच शहद और चार चम्मच पानी मिलाकर पीने से पेट का तेज दर्द शीघ्र बन्द हो जाता है।

एक नींबू, काला नमक, काली मिर्च, चौथाई चम्मच सोंट, आधा गिलास पानी में मिलाकर पीने से पेटदर्द ठीक हो जाता है।

आजवाइन, सेंधा नमक को नींबू के रस में भिगोकर सुखा लें। पेटदर्द में एक चम्मच चबाकर, पानी पियें। इस प्रकार हर एक घण्टे में, जब तक दर्द रहे, लें। पेट पर सेंक करें।

कीड़ों के कारण पेट में दर्द हो, पेट में कीड़े हों तो सात दिन दो बार नित्य नींबू की एक फांक में पिसा हुआ जीरा, काली मिर्च, काला नमक भरकर चूसें।

मूली पर नमक, नीबू, काली मिर्च डालकर खाने से अपच का पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

आधा कप मूल के रस में आधा नींबू निचोड़कर नित्य दो बार पीने से खाना खाने के बाद होने वाला पेटदर्द ठीक हो जाता है।

कब्ज : गरम पानी और नींबू प्रातः भूखे पेट खाएं। एक गिलास हल्के गरम पानी में एक नींबू निचोड़कर एनिमा लगाएं, पेट साफ हो जाएगा। कीड़े भी निकल जाएगें।

एक मिलास गर्म पानी में एक नींबू, दो चम्मच अरण्डी का तेल (कैस्टर ऑयल) मिलाकर रात को पियें।

एक चम्मच मोटी सौंफ तथा पांच काली मिर्च चबायें, फिर एक गिलास गरम पानी, एक नींबू और काला नमक मिलाकर नित्य पियें।

उल्टी : आधा कप पानी में पन्द्रह बूंद नींबू का रस, भुना एवं पिसा हुआ जीरा, पिसी हुई एक छोटी इलायची मिलाकर आधे घण्टे में पियें। उल्टी बन्द हो जाएगी।

नींबू के छिलके सुखाकर, जलाकर राख बना लें, चौथाई चम्मच राख, आधा चम्मच शहद में मिलाकर चाटने से उल्टी बन्द हो जाती है।

दो छोटी इलायची पीसकर नींबू की फांक में भरकर चूसने से उल्टी बन्द हो जाती है।

क्या आप जानते हैं ?

1. पृथ्वी का अब तक का सबसे बड़ा प्राणी व्हेल है।
2. फैंक लेनटिनी एक ऐसा अद्‌भुत मानव था जिसकी तीन टांगें थी।
3. अमृतसर के स्वर्ग मन्दिर का असली नाम हरिमन्दिर साहब है।
4. स्वर्ग मन्दिर की स्थापना अमृतसर में सिखों के चौथे गुरू गुरू रामदास ने की थी।
5. जैनों के 23 वें तीर्थकर का नाम श्री पार्श्वनाथ है।
6. सबसे तेज बढ़ने वाला पौधा बांस है।
7. अंतरिक्ष युग की शुरूआत 4 अक्टूबर 1957 को हुई थी "स्पुतनिक" नामक प्रथम उपग्रह को रूस द्वारा पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया था।
8. विश्व के सबसे बड़े केकड़े का नाम क्लाज है। इसका वजन 9 किलो व उम्र 60 वर्ष है।
9. दुनिया के सबसे विशाल सांप का नाम अनाकोण्डा है।
10. बौद्ध धर्म के पवित्र धर्मग्रंथ का नाम त्रिपिटक है।

मूर्ख के 10 लक्षण है

1. अधिक बोलना अपने को अधिक काबिल समझना।
2. अपनी बढ़ाई खुद करना तथा दूसरे से अपनी बढ़ाई सुनने की चेष्टा करना।
3. किसी बात को पर, लेकिन, किन्तु, परन्तु लगाकर बढ़ाना।
4. उद्‌देश्यहीन कार्य के पीछे अपने को उलझाए रखना।
5. आमदनी से ज्यादा खर्च करना।
6. दूसरों को पैसे उधार देना और लेने की चिन्ता नहीं करना।
7. अपनी चिन्ता को छोड़कर दूसरों की चिन्ता करना।
8. दूसरों का मजाक उड़ाना।
9. बड़ों का अनादर करना।
10. अपरिचित जन से पल में रिश्ता एवं विश्वास करना।

मानवता की पुकार

चीख–चीख पुकार रही मानवता
अपना अस्तित्व बचाने को
मानस पुत्र लगे हैं
अपना पहचान मिटाने को

सुन्दर जीवन, सुन्दर काया
ईश कृपा से सबकुछ पाया
अनमोल रतन पाकर भी
माटी के मौल गंवाया

शान्ति, ज्ञान, उन्नति पथ
त्याग दिया इसने आज
देवत्व हटा मन मस्तिष्क से
शैतान क़र रहा उन पर राज

अरे ये प्रकृति की श्रेष्ठ कृति
देवत्व पाने की है अधिकारी
पर सबकुछ पूंजी लुटा कर
बन गई दर दर की भिखारी

इतना नीचे गिर सकती है यह
नहीं स्वप्न में था, किया विचार
पशु पक्षी की योनी से भी गिर गई
दुनिया करती है धिक्कार

जीवन शैली दूषित कलुषित
स्वार्थ में लिप्त है
सुकर्मों की सुगंध से
हो गई पूर्ण रिक्त है।

प्रश्न चिन्ह लग रहा आज,
क्या अब भी इसे श्रेष्ठ कहा जावें।
या जन्म दिया उस पर,
खुद देने वाला पछतावे

इतिहास और सीख पूर्वजों की
पूरी तरह इसने बिसराई,
पाश्चात्य सभ्यता की चाह, ने
दानव संस्कृति अपनाई

संस्कृति आदर्श गौण हो गया
जीवन उन्नति पर मौन हो गया
भूल गया मानवता के उस पवित्र उद्देश्य को,
शून्य बनता जा रहा, अपनाकर पशु परिवेश को

क्या शेष रहा अब
इसे अपनाने को
चीख–चीख पुकार रही मानवता
अपना अस्तित्व बचाने को।

– **प्रकाश आर्य,** महू

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि, ज्योति मतः पथोरक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनयादैव्यं जनम।।

ऋ, 10,53,6

अर्थ – संसार के ताने बाने को बुनता हुआ प्रकाश का अनुसरण कर ज्योतिर्मय प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा कर। उलझन रहित कर्म का विस्तार करो, स्वयं मनुष्य बनो और दूसरों को मनुष्य बनाओं और दिव्य प्रजा उत्पन्न करो।

लालच की सजा

एक गॉव में एक गरीब बुढ़िया और उसकी लड़की रहती थी। उस लड़की का नाम राधा था। वह बहुत ही सुन्दर और विनम्र स्वभाव की थी। उसके पड़ोस में एक लालची बुढ़िया रहती थी। उसकी लड़की का नाम गीता था। वे मॉ–बेटी बहुत ही दुष्ट और लालची थीं।

एक बार की बात है राधा की मॉ ने उसे थोड़े से चावल धूप में रखने के लिए कहा। वह चावल धूप में रखकर उसकी देखभाल करने लगी। तभी एक विचित्र कौआ वहॉ पर आया और उसके चॉवल खाने लगा। राधा उस विचित्र कौआ को देखती रह गई, उस कौआ का शरीर सोने का, चोंच चॉदी की और पैर तॉबे के थे।

राधा उसे चॉवल खाते देख रोने लगी और कहने लगी, मैं बहुत गरीब हूं यदि तुमने मेरे चावल खा लिए तो हमको आज भूखा रहना पड़ेगा। इस पर वह कौआ बोला, बेटी रो मत ! मैं तुमको इन चॉवलों की कीमत दे दूंगा। कल तुम सुबह होने से पहले पीपल के पेड़ के नीचे आ जाना।

लड़की ने सारी बात अपनी मॉ को बतायी और सुबह होने से पहले ही तैयार होकर उस कौए के बताए हुए पते पर पहॅुच गयी। वहॉ उसने देखा कि उस पीपल के पेड़ पर एक छोटा सा महल बना है। वह उस महल को काफी देर तक देखती रही। तभी उस महल का दरवाजा खुला तो उसे वह विचित्र कौआ दिखाई पड़ा।

उस कौआ ने राधा की तरफ देखते हुए कहा – बेटी ! तुम समय पर आ गयी हो, कहो तुम्हारे लिए कौन सी सीढ़ी लगाऊॅ सोने की, चॉदी की या तॉबें की। राधा बोली मैं बहुत गरीब हॅू सोने की सीढ़ी के बारे में तो मैं सपने में भी सोच नहीं सकती। तुम मेरे लिए तॉबे की ही सीढ़ी लगा दो। तभी उस कौआ ने राधा के लिए सोने की सीढ़ी लगा दी। राधा उस सीढ़ी से चढ़कर महल पहुंच गयी।

महल में उस कौआ ने उसे तीन डिब्बे दिखाते हुए कहा कि इनमें चॉवल हैं और पूछा कि तुम्हें कौन सा डिब्बा चाहिए बड़ा वाला, छोटा वाला या फिर सबसे छोटा वाला। राधा ने कहा कि मेरे चावल थोड़े से ही थे अतः कृपया मुझे सबसे छोटा चाला डिब्बा दे दें। कौआ ने उसे बड़ा वाला डिब्बा उठाकर दे दिया। राधा ने उसे धन्यवाद दिया और अपने घर चली गयी। घर जाकर उसने डिब्बे को खोला तो देखा कि वह हीरे मोतियों से भरा हुआ है। फिर राधा और उसकी मॉ बहुत अमीर हो गयीं।

एक दिन उनके पड़ोस की बुढ़िया और उसकी लड़की उनकी अमीरी का राज पूछने लगीं। राधा और उसकी मॉ ने इसका कारण बता दिया।

दूसरे दिन उस बुढ़िया की लड़की ने थोड़े से चावल धूप में डाल दिये। तभी वह विचित्र कौआ वहॉ आया और उन चावलों को खाने लगा। गीता चिल्लाकर बोली, दुष्ट कौआ। तुम्हें इन चावलों की कीमत अब देनी ही पड़ेगी। कौआ ने उसे भी पीपल के नीचे बुलवाया।

वह अगले दिन सुबह पेड़ के नीचे पहुँची और चिल्लाकर बोली, अरे ओ नालायक कौऐ। बाहर निकल और मेरे चावलों की कीमत दो। कौआ ने उसे ताँबे की सीढ़ी से ऊपर बुलाया और तीन डिब्बे दिखाते हुए कहा, इनमें से तुम्हें कौन सा चाहिए। लड़की ने झट से बड़ा वाला डिब्बा उठा लिया और बिना धन्यवाद दिए चली गयी। घर जाकर माँ बेटी ने डिब्बा खोला तो उसमें एक भयंकर नाग निकल आया जिसके डसने पर वे दोनों मर गयीं।

यह कथा हमें यह शिक्षा देती है कि नम्र रहो लालच न करो। लालच बुरी बला है। यह नाग की तरह हानिकारक है।

गाय सर्वोत्तम क्यों !

गौ और कृषि अन्योन्याश्रित हैं। इसीलिए महर्षि ने गोकृष्यादिरक्षिणी सभा नाम रखा था। गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों हैं ? इसमें निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं हैं –

1. गाय का दूध पीला और भैंस का दूध सफेद होता है। इसीलिए इसके दूध के विशेषज्ञ कहते हैं कि गाय के दूध में सोने का अंश होता है जो कि स्वास्थ्य के लिए उत्तम है और रोगनाशक है।

2. गाय का दूध बुद्धिवर्धक और आरोग्यप्रद है।

3. गाय का अपने बच्चे के साथ स्नेह होता है जबकि भैंस का बच्चे के साथ ऐसा नहीं होता है।

4. गाय के दूध में स्फूर्ति होती है। इसीलिए गाय के बछड़े व बछियाँ खूब उछलते कूदते फिरते हैं। भैंस का दूध पीने से आलस्य व प्रमाद होता है।

5. गाय के बछड़े को 50 गायों या अधिक में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी माता को जल्दी ही ढूँढ़ लेता है। जबकि भैंस के बच्चों में यह उत्कृष्टता नहीं होती।

6. गाय का दूध तो सर्वोत्तम होता ही है, साथ ही गाय का गोबर व मूत्र भी तुलना में श्रेष्ठ है। गाय का गोबर स्वच्छ व कीटनाशक होता है। गाय की खाद तीन वर्ष तक उपजाऊ शक्ति बढ़ाती है किन्तु भैंस की खाद तो एक दो वर्ष बाद ही बेकार हो जाती है और गौमूत्र का स्प्रे करके कीड़ों के नाश में भी उपयोग लिया जाता है।

ईश्वर

श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः

(जनासः) हे मनुष्यो। (अस्मै) इस परमेश्वर पर (श्रत् धत्त) श्रद्धा करो (स) वह (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् प्रभु है।

ईश्वर सर्वव्यापक है।

गुरू नानक मक्का गए। रात में मस्जिद के बाहर सो गए। उनके पैर मक्का के पवित्र पत्थर की ओर थे। एक मुल्ला ने गुस्से से कहा, ''तुम्हें इतनी भी समझ नहीं है कि अल्लाह की तरफ पैर करके नहीं सोया जाता।''

नानक ने जवाब दिया, मेरे भाई मैं भी काफी मुश्किल में हूं कि अल्लाह की तरफ पैर नहीं करूं। मेरी सहायता करो और जिधर अल्लाह न हो उधर ही मेरे पैर कर दो।

संसार परमात्मा में स्थित है।

श्वेतकेतु की समझ में नहीं आ रहा था कि यह नान रूपों वाला जगत् मात्र एक ही तत्व ''सत्'' से किस प्रकार उत्पन्न हो सकता हैं, उसने अपने पिता ऋषि उद्दालक से जिज्ञासा की। ऋषि ने कहा, ''वत्स, वटवृक्ष का एक फल ले आओ।

श्वेतकेतु फल ले आया।

उद्दालक ने कहा, ''इसको तोड़ो और बताओ कि इसमें तुमने क्या देखा ?

''इसमें अनेक छोटे–छोटे बीज हैं।'' उद्दालक ने बताया। श्वेतकेतु ने उनमें से कोई एक बीज तोड़ने को कहा और फिर पूछा –

''इसमें क्या देखते हो ?''

''कुछ नहीं।'' श्वेतकेतु ने सहज भाव से उत्तर दिया।

ऋषि उद्दालक ने जिज्ञासु पुत्र को समझाते हुए कहा, ''तू इस बीज में अन्तर्निहित सूक्ष्म पदार्थ को इन ऑखों से नहीं देख पा रहे हो और न ही उसकी अनुभूति कर पा रहे हो। लेकिन अपनी समस्त शाखाओं–प्रशाखाओं सहित यह विशाल वटवृक्ष इसमें स्थित है। ठीक इसी तरह, यह सारा संसार उस मात्र एक तत्व ''सत्'' में समाहित है। श्वेतकेतु की जिज्ञासा शांत हो गई।

संसार में व्यापक होते हुए भी वह दिखाई नहीं देता।

एक सन्त से किसी ने पूछा, ''ईश्वर है तो दिखाई क्यों नहीं देता ?'' सन्त ने कहा, ईश्वर अनुभूति का विषय है। उसे देखने का कोई उपाय नहीं है। हॉ, उसे अनुभव अवश्य किया जा सकता है।'' सन्त की ये बातें प्रश्नकर्ता को सन्तुष्ट नहीं कर सकीं। उसने कहा कि यह कैसी बात है ? समझ में नहीं आई। सन्त ने तभी अचानक पास में पड़ा एक पत्थर उठाया और अपने पांव पर दे मारा। उनके पैर में गहरी चोंट आई, यहां तक कि खून भी बहने लगा। प्रश्नकर्ता यह देखकर हैरान रह गया और बोला, यह क्या किया आपने ? इससे क्या आपको पीड़ा नहीं होगी?

सन्त ने हॅसते हुए कहा, पीड़ा दिखती नहीं फिर भी है। ऐसे ही ईश्वर भी दिखता नहीं, परन्तु है। उसे देखने के लिए बाहर नहीं खोजा जा सकता है। वह खोजने वाले के भीतर ही बैठा होता है। खोजना नहीं।

ईश्वर ध्यान और समाधि द्वारा प्राप्त होता है।

एक तपस्वी था। उसे राजदरबार में बुलाया गया। राजा ने कहा, स्वामीजी आपको कष्ट इसलिए दिया कि हम ईश्वर पर आपका प्रवचन सुनना चाहते हैं ?"

तपस्वी पद्मासन लगाकर बैठ गया। ऑखें बन्द कर ली। राजा ने देखा कि स्वामी जी बोल नहीं रहे हैं। उसने आग्रह किया, "आप चुप क्यों हैं ? प्रवचन शुरू कीजिए।"

तपस्वी का मौन जारी रहा। राजा चिढ़ गया और बोला, "यह क्या बात है? आप बोलते क्यों नहीं ?"

स्वामीजी मुस्कुराये और कहने लगे, "मैं बोल तो रहा हूं। आप समझ ही कब रहे हैं ? ईश्वर शब्दातीत है, मौन है, शान्त है।"

ध्यान दें !

श्वेत कुष्ठ असाध्य नहीं है।

खानपान के दूषित होने से किसी कारण शरीर के विभिन्न भागों पर सफेद दाग हो जाते हैं। इन दागों के अधिक बढ़ने से सारा शरीर कुरूप हो जाता है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति को आत्मग्लानि तो होती ही है। समाज में भी उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। जबकि आयुर्वेदिक दवाईयों से इस कठिन रोग का कुछ समय में ही पूर्ण इलाज हो जाता है।

अनेक संस्थायें या व्यक्ति इस श्वेत कुष्ठ की चिकित्सा का विज्ञापन देकर मालामाल हो रहे हैं, गुरूकुल आश्रम द्वारा निर्मित अतिप्रभावशाली औषधियों के प्रयोग से 3 से 6 महिने के अन्दर इस रोग से पूर्णतः मुक्त हो सकते हैं। इस रोग के लिए गुरूकुल फार्मेसी द्वारा निम्न औषधियों का सैट तैयार किया जाता है :–

1. **श्वेत कुष्ठहर वटी**
2. **कुष्ठ कुठार रस**
3. **श्वेत कुष्ठहर लेप**
4. **श्वेत कुष्ठहर मल्हम**
5. **सौन्दर्य रसायन**
6. **खदिरारिष्ट**

नोट : विशेष लाभकारी के लिए सम्पर्क करें :–

गुरूकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड़ जिला नुआपड़ा (ओडिशा) 766109

मोबाईल : 9437070541

पं. मोतीलाल नेहरू, गायत्री मन्त्र और महर्षि दयानन्द

– पं. मनुदेव अभय "विद्यावचस्पति"

गायत्री मन्त्र को महामन्त्र कहा जाता है, परमात्मा के स्वरूप को दर्शाते हुए इसमें उत्तम बुद्धि की कामना की गई है। सबसे श्रेष्ठ व बड़ा बल बुद्धिबल होता है, इसीलिए इस मन्त्र को महामन्त्र कहा जाता है।

महर्षि दयानन्द के द्वारा सर्वप्रथम इस मन्त्र को जातिवर्ग के भेदभाव से हटकर प्राणीमात्र को इसे सुनने, बोलने का अधिकार प्रदान कर एक महान कार्य किया। इसके पूर्व गायत्री मन्त्र जिसे गुरू मन्त्र कहा जाता था, जो सुनने व बोलने का अधिकार एक वर्ग तक सीमित था।

दिवंगत पं. मनुदेव अभय "विद्यावाचस्पति" द्वारा पंडित मोतीलाल नेहरू व गायत्री मन्त्र के सन्दर्भ में लिखा गया लेख प्रस्तुत है।

महर्षि दयानन्द ने गायत्री मन्त्र सबको सिखाया करते थे। संस्कारविधि में महर्षि दयानन्द लिखते हैं – सन्यस्त होने के पश्चात स्वाध्याय निरन्तर होता रहना चाहिए। ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि में प्रमाद न हो तथा स्वाध्याय में अनाध्याय न हो। इन समस्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि महर्षि दयानन्द और उनके गुरू विरजानन्द गायत्री मन्त्र पर अगाध श्रद्धा रख सबको गायत्री मन्त्र का जाप करने का उपदेश दिया करते थे। उनके इस कार्य का सटीक उदाहरण इस प्रकार है –

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल कांगड़ी के सर्वेसर्वा थे, तब एक बार गुरूकुल के वार्षिकोत्सव पर उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू के पिता श्री पंडित मोतीलाल नेहरू को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया। पं. मोतीलालजी नेहरू ने अपनी स्वीकृति दे दी तथा निश्चित समय पर गुरूकुल पधार गये। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उन्हें मंच पर व्याख्यान के लिए आहूत किया गया। उन दिनों गुरूकुल कांगड़ी का उत्सव जन आकर्षण का केन्द्र होता था। सभा में बहुत बड़ी संख्या श्रोताओं की थी। माननीय प्रमुख वक्ता पं. मोतीलाल नेहरू ने मंच पर खड़े होकर सर्वप्रथम गायत्री मन्त्र का विधिवत उच्चारण किया, तत्पश्चात उन्होंने अपना सारगर्भित भाषण दिया। हम यहां उनके भाषण का उल्लेख या समीक्षा करना नहीं चाहते, अपितु उन्होंने गुरूकुल मन्त्र से गायत्री मन्त्र के शिक्षक गुरू महर्षि दयानन्द के संबंध में जो सत्य घटना सुनाई, उससे उपस्थित सभी श्रोतागण भाव–विभोर हो उठे।

पं. मोतीलाल नेहरू ने एक अति महत्वपूर्ण रहस्य का उद्‌घाटन किया। उन्होंने कहा –

यह बात उन दिनों की है, जब महर्षि दयानन्द आगरा में एक महाविद्यालय के निकट प्रांगण में स्थित बगीचे में ठहरे हुए थे। हम 15–20 युवक प्रतिदिन दोपहर पश्चात फुटबॉल खेलने जाया करते थे। सायंकाल खेल समाप्ति के पश्चात एक दिन मैं अपने कुछ साथियों के साथ बगीचे में ठहरे, सन्त (महर्षि दयानन्द) की कुटिया चला गया और श्रद्धा सहित प्रणाम कर सामने बैठ गया। हमारे आगमन की सूचना पाकर स्वामी जी भी बाहर रखे तख्त पर आकर विराजमान हो गये। हम सब लोगों ने उनसे कुछ उपदेश देने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा – मैं उपदेश देने के पूर्व आप लोगों से कुछ चर्चा करना चाहता हूं। युवकों के समूह में मैं ही सबेसे आगे बैठा था। स्वामीजी ने मेरा नाम, धाम और काम पूछा। मैंने सब कुछ सही–सही बता दिया। उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा –

युवक तुम ब्राह्मण बालक प्रतीत होते हो ?

मैंने कहा – हां स्वामी जी, मैं कश्मीरी ब्राह्मण हूं और यहां पढ़ने आया हूं।

स्वामी जी ने प्रतिप्रश्न किया – ब्राह्मण बालक होने के कारण क्या तुम्हें 'गायत्री मन्त्र' याद है ?

यह प्रश्न सुनकर मैं निरूत्तर हो गया। यद्यपि मेरा पूर्व में यज्ञोपवीत संस्कार हो चुका था और पुरोहित जी ने सम्भवतः गायत्री मन्त्र उच्चारित भी कराया था। किन्तु न तो मुझे याद रहा और न पुरोहितजी ने इसके विषय में कभी मुझसे पूछा।

स्वामीजी से नम्रमापूर्वक सिर झुकाते हुए शर्मीले ढ़ंग से कह दिया – नहीं, स्वामी जी मुझे गायत्री मन्त्र नहीं आता है। मैं पूरी तरह भूल गया हूं।

पूजनीय स्वामीजी यह सुनकर मुस्करा दिये। उन्होंने एकबार हम सब युवकों को दृष्टि भर कर देखा और फिर सोचा। उन्होंने मुझसे पूछा – क्या तुम गायत्री मन्त्र सीखना चाहते हो ? मैंने तत्काल उत्तर दिया हां, स्वामीजी महाराज, मुझे गायत्री मन्त्र की दीक्षा देने की कृपा करें।

पं. मोतीलाल नेहरू यह कहते हुए श्रद्धावश थोड़े भावुक हो उठे। श्रद्धालु की भावना का सत्कार करते हुए उन्होंने आगे कहना शुरू किया। इसके पश्चात ऋषिवर दयानन्द ने मुझे पद्मासन लगा कर बैठने के लिए कहा। में तत्काल उचित आसन लगा कर उनके सम्मुख बैठ गया। स्वामीजी के मुख मण्डल का इतना तेज था कि उनसे ऑख से ऑख मिलाकर बैठना अति कठिन था। फिर उन्होंने मुझे नमस्ते की मुद्रा में नेत्र बन्द कर, दोनों हाथ जोड़कर हृदय के निकट लाने के लिए कहा। मेरे द्वारा यह सब करने के पश्चात ऋषि ने गायत्री मन्त्र धीरे–धीरे बोलकर उसे दोहराने के लिए कहा। मैंने वैसे ही किया। उन्होंने मुझे गायत्री मन्त्र के अर्थ को भी समझाया। मुझे स्मरण है मैं स्वामीजी के निकट लगातार 3–4 दिन तक आता रहा और उन्हें मौखिक रूप से गायत्री मन्त्र सुनाता रहा। मेरे इस क्रम का मेरे साथियों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। फिर एक दिन एकाएक स्वामीजी कहीं अन्य नगर हेतु प्रस्थान कर गये। इसलिए मैं महर्षि दयानन्द को अपना दीक्षा गुरू मानता हूं।

महर्षि दयानन्द और गायत्री मन्त्र की इस रहस्यपूर्ण बातों को सुनकर मंच पर उपस्थित सब विद्वान तथा विशाल जनसमुदाय के लोग जरा जोश में आये और उन सभी ने मिलकर महर्षि दयानन्द की जय का उद्घोष किया। इस उद्घोष लगाने वालों में पं. मोतीलाल नेहरू स्वयं भी थे।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द, गायत्री मन्त्र को सदैव अति महत्व दिया करते थे। किन्तु उसके चमत्कारवाद तथा किराये से जप अनुष्ठान कराये जाने का सदैव विरोध किया करते थे। उन्होंने अपने समस्त ग्रंथों में यन्त्र–तन्त्र प्रसंगानुसार गायत्री मन्त्र की व्याख्या की है। इन्हीं भावनाओं के अनुरूप आर्य समाज गायत्री मन्त्र को स्वीकार करता है, जो कि स्तुत्य है।

अथर्ववेद की सूक्तियाँ

1. **तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।**
   उस सबसे महान प्रभु के लिए नमस्कार हो।

2. **तस्य ते भक्तिवांसः स्याम।**
   हे प्रभो ! हम तेरे सच्चे भक्त बनें।

3. **स नः पर्षदति द्विषः।**
   ईश्वर हमें द्वेष–भावों वा शत्रुओं से अलग रखे।

4. **स एष एक वृदेक एव।**
   वह ईश्वर निश्चय से एक ही है।

5. **संश्रुतेन गमेमहि।**
   हम वेद की आज्ञा के अनुसार चलने वाले हों।

6. **मा श्रुतेन विराधिषि।**
   मैं कभी वेद–शास्त्र से अलग न होऊं, उसके विपरीत न चलूं।

7. **स नो मुंचत्वहंसः।**
   वह प्रभु हमें पाप से छुड़ा देवे।

8. **तमेव विद्वान न विभाय मृत्यांः।**
   आत्मा, वा परमात्मा को जानकर मनुष्य मौत से नहीं डरता।

गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग

प्रतिदिन 50 मि.ली. भारतीय गाय का मूत्र सूती कपड़े की आठ परत कर छानकर प्रातः खाली पेट पियें। इस गोमूत्र के सेवन से एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद में कुछ खायें–पियें नहीं। इस प्रकार देशी गाय का मूत्र सेवन करने से पाईल्स, लकवा (पक्षघात), पथरी (मूत्र पित्त), दमा, सफेद दाग, टॉसिल्स, हार्ट अटैक (कोलेस्ट्रॉल), श्वेत प्रदर, अनियमित माहवारी, गठिया, डायबिटीज (मधुमेह), किडनी के रोग, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), सिरदर्द, टी. बी., कैंसर आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

जलोदर : गोमूत्र 50 मिली और आधा ग्राम हरड़ (एरंड, तेल में भुनी हुई) रात्रि को गो दुग्ध से लेने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है।

पाण्डु (कामला में) : गोमूत्र 50 मिली. पुनर्नवा मूल का क्वाथ 100 मिली. दोनों मिलाकर प्रातः–सायं लें। शीघ्र लाभ होगा।

जुकाम में : गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन पान करने से एवं गापालनस्य लेने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

उदरकृमि : गोमूत्र 50 मिली. 1 ग्राम अजवाइन चूर्ण के साथ प्रातःसायं सेवन करने से एक सप्ताह में कृमि नष्ट हो जाते हैं।

संधिवात में : (जोड़ों का दर्द व गठिया) महारास्नादि के क्वाथ के साथ गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

दांत दर्द या पायरिया में : दांत व दाढ़ दर्द में गोमूत्र बहुत अच्छा कार्य करता है। जब दांत दर्द असह्य हो जाए तो गोमूत्र का कुल्ला करें। इससे बड़ा चमत्कारी प्रभाव होता है। गोमूत्र से प्रतिदिन कुल्ला करने पर पायरिया रोग समाप्त हो जाता है।

यकृत व प्लीहा की सूजन में : पांच तोला गोमूत्र में एक चुटकी नमक मिलाकर अथवा पुनर्नवा के क्वाथ में समान भाग गोमूत्र मिलाकर नियमित पीने से यकृत व प्लीहा की सूजन समाप्त हो जाती है।

चर्मरोग में : नीम, गिलोय क्वाथ के साथ दोनों समय गौमूत्र के साथ सेवन करने से रक्त दोष जन्य रोग नष्ट हो जाते हैं। जीरे को गोमूत्र के साथ बारीक पीसकर लेप करने व मालिश करने से चमड़ी सुवर्ण एवं रोग रहित हो जाती है।

कर्म–फल सिद्धान्त

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल पाने में परतन्त्र –

– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

प्रश्न – जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल पाने में परतन्त्र है, इसका क्या अर्थ है।

उत्तर – इसका अर्थ यह है कि किसी काम के करने में जीव की पूर्ण अधिकार है कि उसे करे, या न करे या उलटा करे। मैं बोलूं या न बोलूं या अपशब्द बोलूं। इन तीनों बातों का मुझे अधिकार है, परन्तु जब बोल चुका तो काम हो चुका। परिस्थिति मेरे हाथ से निकल गई। उसका परिणाम मुझे भोगना पड़ेगा। यदि मुझे कोई बात कहनी चाहिये थी और मैं समय आने पर चुप रहा तो भी मुझे हानि भोगनी पड़ेगी। यदि मैं झूठ बोला या किसी को गाली दे दी तो उसका भी दुष्परिणाम भोगने में मैं परतन्त्र हूं। काम की पूर्ति के पहले तो मेरा अधिकार था। अब जगत के व्यवस्थापक के हाथ में चला गया मैं सर्वथा परतन्त्र हूं। गीता में यही कहा है कि –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्म–फलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

अर्थात् – मनुष्य का कर्म करने का अधिकार है। कर्म ज्यों ही समाप्त हुआ, उसका फल कर्म करने वाले के हाथ से निकल ईश्वर की व्यवस्था का अंग बन जाता है। आपको अधिकार है कि आप आम बोवें या जामुन परन्तु जब आप बो चुके तो जगत् नियन्ता की व्यवस्थानुसार आम के बीज से आम के ही अंकुर, आम के ही पत्ते, आम के ही फूल और आम के ही फल निकलेगें, जामुन के नहीं। आप तो काम करने के पश्चात ही परतन्त्र हो जाते हैं। अतः आपको चिन्ता उसी समय तक करनी है, जब तक काम समाप्त नहीं हुआ। उसके पश्चात कर्मफल की चिन्ता व्यर्थ है। आम का बीज बोकर बीज में जामुन के पत्तों की इच्छा निरर्थक है। इसलिये न तो कर्म–त्याग से काम चलता है और न कर्म के पश्चात फल की चिन्ता से। **कर्तव्य का न करना भी अशुभ है और उलटा करना भी अशुभ।**

प्रश्न – मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र तो नहीं है। जगत के बनाने वाले ने मनुष्य को परिस्थितियों से इतना जकड दिया है कि उनके विरूद्ध मनुष्य कुछ कर ही नहीं सकता। अतः मनुष्य को स्वतन्त्र कहना मिथ्या है। हमको व्यर्थ ही स्वतन्त्र कह कर हमारे कर्मों के लिये दण्ड दिया जाता है। मनुष्य प्रपंच के हाथ में खिलौना है। हम दैव के हाथ की कठपुतली हैं। वह जैसे चाहे नाच नचावें।

स्वामी दयानन्द –

धर्म : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसे धर्म कहते हैं।

स्वर्ग : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।

नरक : जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह नरक कहलाता है।

अभयं मित्रादभयममित्रादमयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अर्थात् : हे सर्व भयहर्ता परमात्मन्। मित्र से हमें अभय (अर्थात् भय से अन्य फल) शत्रु से अभय ज्ञात शत्रु तथा अज्ञात् शत्रु से अभय हो, रात्रि तथा दिन में अभय हो। सब दिशाऍं हमारे लिये हितकारिणी होवें।

सद्‌गुणों की महत्ता :

गुणैरूत्तमतां यान्ति नोच्चैरासन संस्थितैः।
प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरूड़ायते।। चाणक्य नीति

अर्थात् : गुणों से ही मानव महान होता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।

अद्यैव कुरू यच्छेयो मा त्वां कालोऽत्यगादयम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।

महाभारत शांतिपर्व 164–14

भावार्थ : जो उत्तम कार्य करना हो, वह आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाय। मृत्यु इस बात की प्रतिक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूरा किया है या नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यामा (बर्मा) में निश्चित

विगत 2006 से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने की घोषणा दिल्ली में आयोजित आर्य सम्मेलन में की थी। उस घोषणा के अनुसार 11 वॉ महासम्मेलन बर्मा में आगामी 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को सम्पन्न होने जा रहा है।

इस सन्दर्भ में सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य के साथ अन्य पदाधिकारी विगत वर्ष 2016 में म्यामा गए थे। उस समय शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की लगभग 15 आर्य समाजों में जाकर सम्पर्क किया था सम्मेलन की चर्चा भी हुई थी।

बर्मा में पहले भी आर्य समाज की गतिविधियॉ विद्यालय, अनाथालय, सत्संग संचालित होते थे। बर्मा में लगभग प्रत्येक बड़े शहर में जैसे रंगून, माण्डले, लाशियो, मिचिना, मोगोग, जियावाड़ी में भव्य भवन बने हुए हैं। रंगून की आर्य समाज की स्थापना 1899 में हुई थी। उसी प्रकार माण्डले आर्य समाज 1895 में बनी जिसमें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी आते रहे हैं। माण्डले में ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय को गिरफ्तार कर बन्दी बनाया था। आज भी वह किला और जेल जिसकी चारों ओर से 12 कि.मीटर के घेरे में गहरा पानी भरा है वह ऐतिहासिक स्थान है।

इस समय बर्मा में लगभग 30–32 आर्य समाजें हैं हजारों व्यक्ति आर्य समाज से जुड़े हैं।

भारत का निरन्तर सम्पर्क न होने से तथा बीच में मिलेट्री शासन होने से प्रचार प्रसार रूक गया था। किन्तु पुनः विदेशों में बढ़ते प्रचार प्रसार से एक नवस्फर्ति का संचार हुआ है।

दिल्ली में आयोजित सन् 2012 के आर्य महासम्मेलन में ही बर्मा से आए आर्यजनों ने सम्मेलन की घो णा की थी।

इसी उद्देश्य से मैं तथा श्री विनय आर्य 13 मई से 18 मई तक बर्मा में रहे। वहाँ अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क किया, वैदिक सैद्धान्तिक चर्चा एवं आर्य समाज के संबंध में जानकारी दी, बैठकें ली।

बर्मा प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल, मन्त्री पवनजी, माण्डले समाज के प्रधान विशेष नरोला, मन्त्री सन्दीप खेत्रपाल, सभा के उपाध्यक्ष प्रदीप गुलाटी, प्रान्त के अनेक कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन को सफल बनाने की योजना बनाई।

सम्मेलन लाशियों में स्थित एक विशाल सनातन मन्दिर शंखाई में करने का निर्णय लिया। कार्यक्रम स्थल तक अत्यन्त मनोहर प्राकृतिक दृश्य यात्री को आकर्षित करता है।

शीघ्र ही इस संबंध में पूर्ण कार्यक्रम व योजना बनाकर प्रकाशित की जावेगी।

आर्य समाज मन्दिर, मल्हारगंज इन्दौर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, मल्हारगंज इन्दौर का वार्षिक निर्वाचन (2017–18) हेतु रविवार दिनांक 14/5/2017 को रविवारीय सत्संग के उपरान्त 11 बजे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के द्वारा निर्धारित पर्यवेक्षक श्री रमेशचन्द्र गोयल के सानिध्य में आयोजित आर्य समाज की साधारण सभा के पश्चात वर्ष 2017–18 हेतु सर्वसम्मति से डॉ. दक्षदेव गौड़ 'प्रधान', डॉ. विनोद अहलुवालिया 'मन्त्री', तथा सुश्री सुशीला शर्मा 'कोषाध्यक्ष' के रूप में निर्विरोध चुने गए। चुनाव उपरान्त नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने सभी सदस्यों एवं सभासदों का आभार व्यक्त किया।

संगीतमय श्री राम कथा सम्पन्न

मौलाना। आर्य समाज मन्दिर, विक्रम नगर, ग्राम मौलाना तह. बड़नगर में दिनांक 9 मई से दिनांक 15 मई 2017 तक पं. कुलदीप जी आर्य भजनोपदक, बिजनौर (उ.प्र.) द्वारा श्रीराम कथा प्रस्तुत की साथ ही वैदिक विद्वान श्री पं. विरेन्द्र कुमारजी शास्त्री के द्वारा यज्ञ करवाया गया व वैदिक प्रवचनों की ज्ञान गंगा भी प्रवाहित हुई।

रात्रिकालीन विषय गोष्ठियों में आमन्त्रित विद्वानगण – सर्वश्री प्रकाशजी आर्य, महू (वैदिक विद्वान–महामन्त्री सार्व. सभा, दिल्ली), श्री वेदप्रकाशजी शर्मा (आई.जी. भोपाल), श्री राजेन्द्र व्यास, उज्जैन, श्री हुकुमचन्दजी सावला, इन्दौर (राष्ट्रीय उपा. वि.हि.प.), सुश्री अंजली आर्य, करनाल (प्रसिद्ध भजनोपदेशिका), श्री गोविन्दजी आर्य, देपालपुर (वैदिक प्रवक्ता), श्री राजवीरसिंहजी, इन्दौर (संस्था : अन्ध विश्वास निवारण), श्री राकेशजी उपाध्याय, इन्दौर (जैविक खेती विशेषज्ञ), श्री राहुलजी, उज्जैन (युवा कवि वर) एवं अन्य स्थानीय गणमान्य अतिथि भी पधारे।

व्यायाम शिक्षक कृपालसिंह आर्य द्वारा आर्य वीर–वीरांगना दल का शिविर भी रखा गया था। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य लक्ष्मीनारायण पाटीदार थे।

अनित्याशुचि दुःखानात्मसु
नित्य शुचि सुखात्म ख्यातिरविद्या। "योग दर्शन 2/5"

मनुष्य अज्ञानता के कारण अनित्य को नित्य और नित्य को अनित्य, अशुद्ध को शुद्ध और शुद्ध को अशुद्ध मानता है, तथा सुख में दुःख की व दुःख के कारणों में सुख की अनुभूति करता है, यही अविद्या है।

सार्वदेशिक सभा के द्वारा संगठन का एक और प्रशंसनीय प्रयास अण्डमान में आर्य समाज की स्थापना

आर्य समाज की स्थापना का मुख्य लक्ष्य था "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" और वैदिक विचारधारा को समस्त विश्व तक पहुंचाना। सार्वदेशिक सभा का गठन मुख्यतः देश की आन्तरिक व उसके बाहर विदेशों में इस पुनीत कार्य का विस्तार करने, इसकी रक्षा करने के लिए हुआ है। सार्वदेशिक सभा इस उद्‌देश्य व कर्तव्य का निर्वाह पूर्ण मनोयोग से कर रही है।

प्रारंभिक क्रान्ति में हमारे पूर्व अधिकारी, विद्वानों का और सन्यासियों का इसमें अत्यन्त सराहनीय तथा बहुत कठिन परिश्रम रहा। जिनके द्वारा एक सौ वर्ष से भी पूर्व देश, देशान्तरों में कई स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना की गई। कुछ वर्षों से इसमें कुछ शिथिलता आई किन्तु सन् 2006 के पश्चात पुनः एक सक्रिय चेतना के साथ अधूरे कार्य को पूर्ण करने के संकल्प के साथ संगठन के कार्य को गति प्रदान की जा रही है। देश व विदेशों में संगठन के कार्यों से संगठन व सम्पर्क बढ़ा है। अमेरिका, लन्दन, दक्षिण अफ्रिका, मॉरिशस, सूरीनाम, गयाना, हॉलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, बर्मा, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, फिजी, नेपाल आदि देशो से बार बार सम्पर्क किया, वहॉ अन्तराष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलनों की योजना बनाई, आज उनसे जीवन्त सम्पर्क बना हुआ है, साहित्य सामग्री, सन्देश का सिलसिला निरन्तर बना हुआ है। इसके साथ ही देश के उस क्षेत्र को जहॉ साम्प्रदायिक विचारधाराएं धर्म परिवर्तन कराने में सक्रिय हैं, सत्य सनातन धर्म का प्रचार नहीं है तथा जहॉ आर्य समाज अभी तक नहीं हैं वहॉ आर्य समाज की स्थापना का विशेष ध्यान दिया गया।

आसाम, मिजोरम, नागालैण्ड, केरल जैसे स्थानों में जहॉ सनातन धर्मी तेजी से अल्प संख्यक होते जा रहे हैं वहॉ आर्य समाज की गतिविधियों में वृद्धि करने का प्रयास, सेवा, शिक्षा व वेद प्रसार के द्वारा जारी है।

इसी तारतम्य में अण्डमान द्वीप, आर्य समाज की गतिविधि से पूर्णतः अछूता था, इसलिए वहॉ भी आर्य समाज का कार्य प्रारंभ करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास हेतु श्री आचार्य आनन्द पुरूषार्थी के द्वारा 7 दिन वहॉ जाकर भूमिका तैयार कर आर्य समाज की विचारधारा से अनेक व्यक्तियों को अवगत कराया गया। इसके पश्चात निरन्तर सम्पर्क बना रहा। इस कार्य को अंजाम देने के लिए 4 मई से 9 मई तक 5 दिवसीय कार्यक्रम अण्डमान हेतु बनाया गया। जिसमें मैं, श्री विनय आर्य, श्री शिवकुमार मदान, श्री एस. के. कोचर वहॉ पहुंचे। अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क किया, चर्चा के दौरान काफी उत्साहवर्द्धक वातावरण निर्मित हुआ। भजन, व्याख्यान, प्रवचन के माध्यम से भी सम्पर्क कर विधिवत आर्य समाज का संगठन का

गठन किया और आर्य समाज तथा विद्यालय हेतु भवन निर्माण की योजना बनाई। अनेक स्थानों पर जाकर भवन हेतु भूमि देखी। सबसे प्रसन्नता की बात यह रही कि इस हेतु स्थानीय जो सदस्य संगठन से जुड़े, वे वहाँ के प्रतिष्ठित शिक्षित वर्ग के सदस्य हैं। जिनमें वैदिक धर्म और आर्य समाज को समझकर एक उत्साहवर्द्धक वातावरण निर्मित हुआ। वहाँ के उप राज्यपाल श्री जगदीशजी मुखी से भेंट कर अपने मन्तव्य से अवगत कराया, वहाँ से भी यथायोग्य सहयोग का आश्वासन मिला।

वहाँ लम्बी चर्चा के पश्चात संगठन का गठन कर दिया गया, इसके प्रधान प्रोफेसर डॉ. सुरेश चतुर्वेदी, प्रोफेसर सुरेश आर्य (मन्त्री), डॉ. रविशंकर पाण्डेय (कोषाध्यक्ष), इंजीनियर शशिमोहन सिंह (उपमन्त्री) एवं डॉ. अरूण श्रीवास्तव (उपप्रधान)। डॉ. कंडी मुथव को आर्डिनेटर सम्पर्क अधिकारी के रूप में, श्री विकास पटेल (सी.ए.), डॉ. चन्द्रा श्रीवास्तव, श्री सत्यव्रत दुबे (सी.ए.) आडीटर, डॉ. रेखा वैद्य (पुस्तकाध्यक्ष), प्रोफेसर वाचस्पति, अशोक कुमार (सी.एम.ओ.), श्री हरिनारायण अरोरा (पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष) संवरक्षक व अन्य सदस्य मनोनीत किए गए हैं। निश्चित ही कुछ ही वर्षों यहाँ आर्य समाज इस क्षेत्र का एक प्रसिद्ध व सक्रिय संगठन के रूप में पहचान बनायेगा।

परमात्मा की कृपा से निकट भविष्य में ही गोवा में जहाँ अभी तक आर्य समाज की शाखा प्रारंभ नहीं हुई है वहाँ भी सम्पर्क किया जा रहा है और यथाशीघ्र पुनः एक शुभ समाचार आप तक पहुंचेगा, ऐसा विश्वास है।

उपरोक्त समस्त कार्यों के लिए निष्काम व समर्पित, व्यक्तित्व के रूप में सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य का पूर्ण सहयोग, संबल, मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। उसी प्रकार यह परम सौभाग्य है कि भामाशाह के रूप में स्थापित व्यक्तित्व महाशय धर्मपालजी (एम.डी.एच.) का बहुत बड़ा आशीर्वाद संगठन को प्राप्त है। उनकी प्रेरणा और प्रबल इच्छा आज भी यही है कि जहाँ–जहाँ आर्य समाज नहीं हैं, महर्षि दयानन्द की विचारधारा नहीं पहुंची, वहां आर्य समाजें प्रारंभ करो। अण्डमान के संबंध में भी उनकी प्रबल भावना ऐसी ही रही। सम्पूर्ण आर्य जगत ऐसे आशीर्वाद दाता का हृदय से आभार व्यक्त करता है।

प्रकाश आर्य

सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

गुरूकुल होशंगाबाद का 106 वॉ स्थापना दिवस मनाया गया

27 अप्रेल 2017। गुरूकुल होशंगाबाद का 106 वां स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय व्यक्तियों के अतिरिक्त अनेक प्रान्तों से व्यक्ति उपस्थित हुए थे। यज्ञोपरान्त गुरूकुल के 105 वर्ष कें इतिहास व वर्तमान प्रगति पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य और पुलिस अधीक्षक होशंगाबाद श्री आशुतोष प्रतापसिंह, श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, श्री जयनारायण आर्य, श्री अतुल वर्मा एवं स्वामी ऋतस्पतिजी, आचार्य आनन्द पुरूषार्थी, आचार्य नन्दकिशोर एवं श्री योगेन्द्र याज्ञिक आदि उपस्थित थे और छात्रावास के संबंध में उद्‌बोधन दिया।

इसी अवसर पर गुरूकुल का त्रैवार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वानुमति से आचार्य सत्यसिन्धु को समिति का अध्यक्ष, श्री योगेन्द्र शास्त्री मन्त्री, श्री अतुल वर्मा कोषाध्यक्ष, श्री रामकिशोर कासदे उपप्रधान, श्री रामअवतारसिंह उपमन्त्री, श्री राजेन्द्र भार्गव आदि .अन्तरंग सदस्य चुने गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं निर्वाचन सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी के निर्देशन में सम्पन्न हुए। गुरूकुल के विकास और उसमें और नई गतिविधियां प्रारंभ करने की योजनाओं पर विचार हुआ। आगामी माह जून में एक बड़ा विशेष कार्यक्रम 9, 10, 11 जून को रखा गया है। मन्त्री श्री योगेन्द्र याज्ञिक ने और स्वामी ऋतस्पतिजी न सबका आभार व्यक्त किया।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष—बार—बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है. ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ▪ पढ़ाना और सुनना▪सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ।।

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

।। ओ३म् ।।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

JMIT # 98262-71062

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू